सद्विचार पुस्तक माला नं० १३

मानसिक शक्ति।

Mrs. James Allen की Might of Mind नामक
पुस्तक का भाषानुवाद

अनुवादक—

बाबू चेतनदास बी॰ ए॰
बाबू नाथुराम सिंघई।

प्रकाशक—

हिंदी साहित्य-भंडार, लखनऊ।

प्रथमावृत्ति १०००]   १९२०   [मूल्य ।)

Printed by Pt. Ghasi Ram at the Deshopkarak Press,
Narhai Road Lucknow,

विषय-सूची ।

-0-

—:o:—
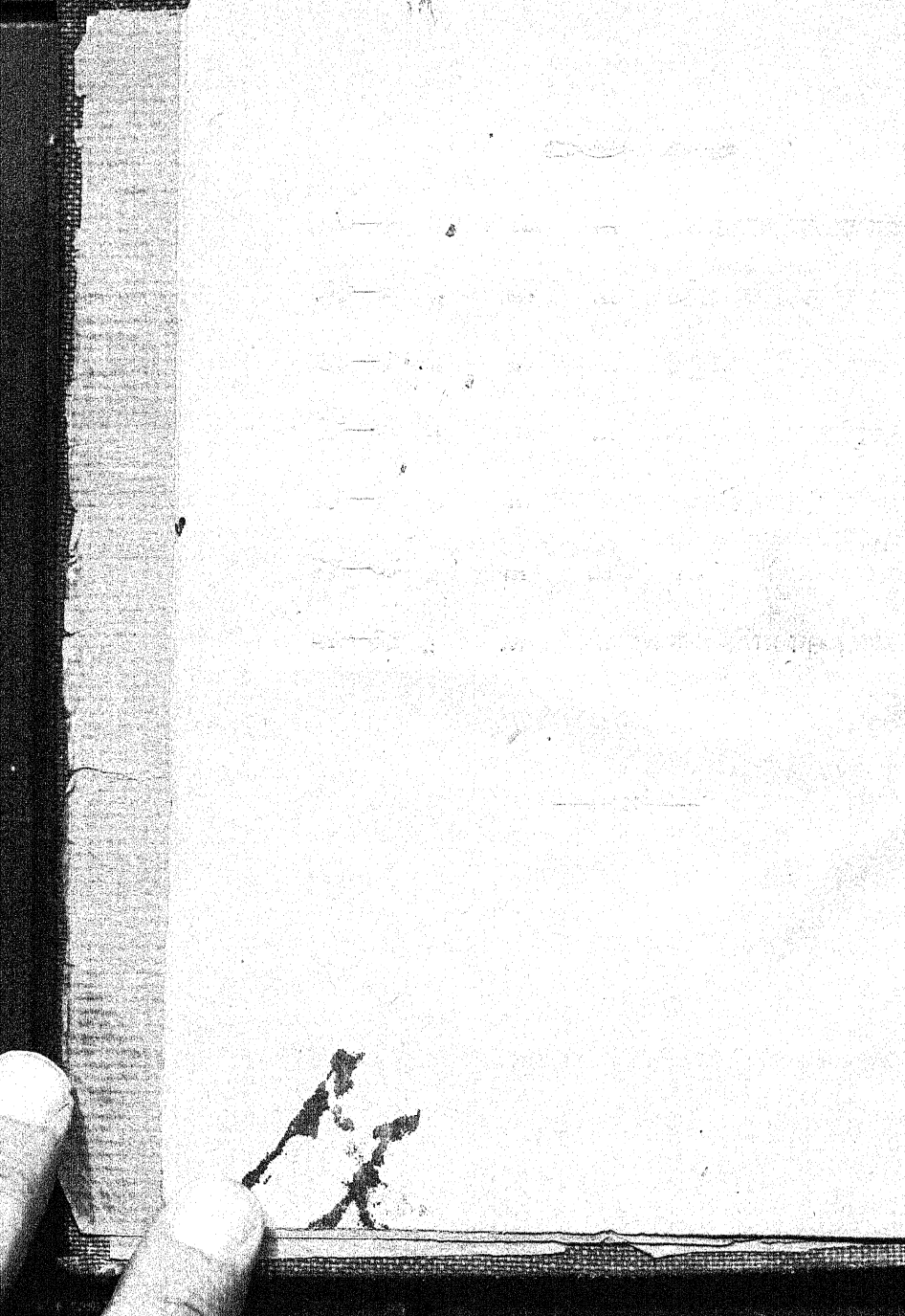
मानसिक शक्ति।

१.—मन का वशीकरण।

जब तुम्हारा मन इधर उधर परिभ्रमण करे तो तुम्हें चाहिए कि तुम उसको बड़ी बड़ी समस्याओं पर लाकर स्थित करो।

(जेम्स एलन)

जब मनुष्य ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग में पैर रखता है तो सबसे कठिन बात जो इस शिष्य को मालूम होती है वह मन का अपने वश में रखना है। यह कितना क्लिष्ट और कष्टसाध्य कार्य है, इसका केवल वे ही मनुष्य अनुभव कर सकते हैं जिन्हों ने इसके लिए कुछ परिश्रम किया है। जब हम विचारों को अपने आधीन रखने के सम्बंध में सोचते हैं तब हमें कुछ अनुभव होता है कि मन सदैव कितना उद्दंड और अशासित अवस्था में रहता रहा है और वह कैसे हर प्रकार की ओर

हर विषय की विचार तरंगों का पात्र रहा है और कैसे सब प्रकार के संकल्प विकल्पों का द्वार रहा है। इस बात को देखकर हमें बड़ा विस्मय होता है और साथ ही साथ लज्जा भी आती है कि हम ने कितना अमूल्य समय व्यर्थ चंचल विचारों में नष्ट कर दिया है। वह समय जिसको यदि हम उचित रीति से उपयोग में लाते और उसको किसी अभीष्ट के सिद्ध करने में लगाते तो निस्संदेह हम शक्तिशाली और दृढ़ चारित्रवान बन जाते। ऐसा समय यदि हम शुभ विचारों और शुभ भावनाओं में लगाते तो हमारा जीवन सुधर जाता, हमारी अंतरात्मा पवित्र हो जाती, हम प्रभावशाली बन जाते और हम में आत्मिक शक्ति का महत्व आ जाता।

हमारे विचार में किसी मनुष्य के जीवन का वह बड़ा दिन है जिस दिन कि उपरोक्त बात की सत्यता उसके हृदय में बैठे।

पहिले पहिल मन बश में नहीं होना चाहता। यह घोड़े के नए बछड़े के समान है जो लगाम लगाते समय बड़ी उछल कूद मचाता है और भागने की कोशिश करता है। यदि हम विचार को अपने मार्ग की ओर चलाना चाहते हैं तो हमारा मुख्य कर्त्तव्य यह है कि हम धैर्य धारण करें और अपने चंचल और अस्थिर विचारों को निरन्तर अपनी ओर खींचते रहें। बार बार हमें कुछ निराशा तथा अधीरता तो अवश्य होगी और हमारा चित्त चाहेगा कि निराश होकर छोड़ दें, परन्तु ऐसा करना सर्वदा अपने को हानि पहुंचाना है।

सबसे पहली बात जो मनमें बैठानी चाहिए, धैर्य है। उतावली करने से न कभी किसी को कुछ मिला है और न

मिलने की कोई आशा है। शीघ्रता करने से काम खराब हो जाता है और काम खराब करने से तो यही अच्छा है कि काम को धीरे धीरे करो और सफलता पूर्वक करो। इसलिए पहले पहल अधिक करने की कभी कोशिश मत करो और न विचार ही विचार में समय नष्ट करो नहीं तो मन उसकी ओर न लगाने से थक जाएगा और फिर वह उस उत्तम कार्य के योग्य भी न रहेगा जो तुम्हारे सामने उपस्थित है। जिस मनुष्य ने अपनी मानसिक शक्तियों को अपने आधीन नहीं कर लिया है वह वास्तव में मनुष्य कहलाने योग्य नहीं।

इसके अभ्यास करने का सबसे अच्छा ढंग यह है कि यदि हो सके तो प्रातःकाल कुछ समय नियत करलो और उसी समय मन को स्थिर करना प्रारम्भ करो पहले पहल केवल दस ही मिनट सही तदपश्चात बीस मिनट तक। जब एक या दो सप्ताह हो जावें तो समय को बढ़ा लो और आध घन्टे तक ध्यान किया करो और इसी प्रकार मन एकाग्र करने का अभ्यास बढ़ाते जाओ।

मैं समझता हूं कि यह बहुत अच्छा होगा कि एक शब्द लो और उसी पर मन स्थिर करो। उदाहरणार्थ 'सहानुभूति' शब्द लीजिए। 'सहानुभूति' की सुन्दरता पर विचार करो, इसमें दूसरों को सुखी करने की कितनी शक्ति अव्यक्त है। किस प्रकार और कब वह दूसरों के साथ की जा सकती है। इसके भेद प्रभेद पर सब प्रकार से विचार करो। सम्भव है कि ऐसा करते समय तुम्हारा मन किसी अन्य बात की ओर

चला जाए और तुम समझो, अहा! यह तो बड़ा मनोरंजक है अब मैं इसपर विचार करूंगा, परन्तु ऐसी भूल कभी न करना।

अपने मन को उसी तरफ फेर लो और उसी शब्द पर बराबर विचार करते रहो जिस पर पहले करते थे। यदि चाहो तो दूसरे सबेरे कोई दूसरा शब्द लेलो और फिर वह शब्द जीवन और स्वभाव से क्या सम्बन्ध रखता है, इसको सोचो। जब तक उस शब्द के गुण तुम्हारे जीवन में प्रवेश न कर जावें तब तक उसको न छोड़ो।

शनैः शनैः शब्दों से सिद्धान्तों तक पहुंच सकते हो और तुमको बहुत जल्दी मालूम हो जाएगा कि तुम अपने प्रातःकाल के ध्यान के विचार का अर्थ दैनिक व्यवहार में प्रयोग कर रहे हो, निस्सन्देह यह प्रयोग होता रहेगा और तुम जानोगे भी नहीं। ऐसा अवश्य होना ही चाहिए, क्योंकि जब गम्भीर विचार हम किसी बात पर करते हैं तो वह स्वभाव होजाता है।

मैंने एक बार एक युवती को देखा था जोकि बड़ी मुश्किल से लिख पाती थी। बुरे लेख के कारण स्कूल में उसका सदैव निरादर हुआ करता था और उसके शिक्षकों को पूर्ण विश्वास हो गया था कि अब इसका लेख नहीं सुधर सकता और लड़की स्वयं भी निराश हो गई और बड़ी दुःखित थी। अब वह किसी छुट्टी के दिन अपनी सखी के यहां गई जिसने उसके दुःख को सुनकर पूछा कि बताओ तुम किस प्रकार लिखना चाहती हो। लड़की ने दुखी मन से उत्तर दिया, ओहो, मैं इसको नहीं जानती; मैं इसके मारे मरी जाती हूँ। मुझे उन कापियों के देखने से भी घृणा होती है। उसकी सहेली ने कहा अच्छा

कापियों को जाने दो । अब तुम यह बताओ कि किसका लिखना सुन्दर है । लड़की ने जल्दी से जवाब दिया कि मेरे विचार से अमुक लड़की बहुत ही सुंदर लिखती है । यदि मैं उसके समान लिख सकूं तो अच्छा हो परन्तु यह असम्भव है क्योंकि मेरे शिक्षक मुझ से कहा करते हैं कि तुम कभी भी सुन्दर नहीं लिख सकती । उसकी सखी ने कहा कि अब तुम अपने शिक्षकों की बात को बिलकुल छोड़ दो, सब कापियों की सुध बिसार दो सब दुःखों को भूल जाओ और अब अपने मन को उस सुन्दर लेख की तरफ़ लगाओ जिसकी कि तुम इतनी प्रशंसा करती हो । उसके अक्षरों को बार बार पढ़ो और प्रत्येक अक्षर के झुकाव पर भली प्रकार विचार करो । देखो उसमें क्या गुण है, अक्षर कैसा सुडौल और सुन्दर है । जब तुम लिखने को अपना क़लम उठाओ तो मन में यह विचारो कि यही मेरा आदर्श है, इसी के सदृश मैं लिखना चाहती हूँ । दिन में कई बार उसकी बाबत विचार करो । यह सोचो कि तुम उसके अनुसार लिख रही हो और अब सोचो कि कैसी खुशी तुम्हे होगी जब तुम ऐसा लिख सकोगी ।

लड़की ने प्रतिज्ञा की कि मैं अवश्य ही ऐसा करूँगी, क्योंकि यह बात उसके हृदय में बैठ गई थी और उसको उससे अत्यन्त प्रेम हो गया था । गर्मियों की छुट्टी के बाद वह स्कूल आई, उस समय उसका लिखना उसके शिक्षकों से अच्छा था । उस आदर्श ने वास्तव में उसको आदर्श का ही काम किया । यह बारम्बार किसी विषय पर विचारने की शक्ति और एक स्थिर आदर्श के प्रभाव का स्पष्ट उदाहरण है ।

मानसिक शक्ति !

ग्रन्थकार का कथन है कि मनुष्य अपने उच्च नीच विचारों के अनुसार अपनी उच्चनीच अवस्था में रहते हैं। उनका संसार इतना संकीर्ण और अन्धकार मय है जैसे कि उनके संकीर्ण और गन्दे विचार होते हैं। परंतु यदि विचार उदार और उत्तम हैं तो उनका कार्य्य भी बड़ा और सुन्दर है। उनके चारों ओर की वस्तु उन विचारों के रंग से रंग जाती है।

जिस प्रकार लड़की पहले अच्छा नहीं लिख सकती थी, परंतु ज्योंहीं आदर्श लेख को उसने अपने सामने रक्खा त्योंहीं वह सुन्दर लिखना सीख गई, उसी प्रकार आत्मा के सामने भी कोई आदर्श चरित्र होना चाहिए जिसकी ओर बढ़ने का वह यत्न करे, यदि वह कुछ उन्नति करना चाहता है। पहले हमको अपने आत्म-बल की परीक्षा करनी चाहिए जिससे हम अपने आप को जान जाँए। मनुष्य का मन बहुत ही गम्भीर है और अपने आपका ज्ञान करना ऐसा सरल नहीं है जैसा कि पहले पहल दीखता है। यदि हम विचार अधिकार के बाबत थोड़ा भी जानना चाहते हैं तो पहले हमको अपना ज्ञान होना चाहिए। हम अपने विचारों के टुकड़े करें, अपनी इच्छाओं की संभाल करें और अपने से पूछे कि हमने वह क्यों और यह क्यों किया? हम फिर से गतदिन और घंटे को याद करें और अपने प्रत्येक कार्य को तराजू में तौलें। क्या हम ऐसा करने के लिए तैयार हैं? यदि हैं तो हमें प्रति-दिन आत्म-परीक्षा के लिए थोड़ा बहुत समय खर्च करना चाहिए जिससे हमें यह ज्ञान हो जाए कि हम क्या हैं और कहाँ हैं? अपनी आत्मा पर सत्यता का पूर्ण प्रकाश डालने से मत डरो, जो कुछ तुम्हें उस समय प्राप्त हो उसे स्वीकार

करने से मत झिझको। याद रक्खो आदर्श तक पहुंचना अपने आपको मालूम करना है जो कुछ कि हम हैं इस अवस्था से उस दर्जे पर जाना है जैसे कि हम होना चाहते हैं। आत्मा में किसी वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा को अभिलाषा कहते हैं हाथों का फैलाना किसी उत्तम और उच्च वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा को दर्शाता है। क्योंकि जब दृष्टि आदर्श पर नहीं होती है तो मनुष्य नाश को प्राप्त होता है।

जब हमें आत्म-परीक्षा से यह बात ज्ञात हो जाए कि हम क्या हैं और कहां हैं तो फिर हमें अपने आदर्श को स्थिर कर लेना चाहिए और उसको अपने सामने रखकर एकाग्र मन से उसकी ओर ध्यान लगाना चाहिए। यदि हम इस प्रकार नित्य प्रति करते रहेंगे तो अवश्य ही अपने आदर्श के सदृश हो जाएँगे, यही हमारी कोशिशों का प्रतिफल होगा।

——:;-o-;:——

२.—मन की उत्पादन शक्ति।

"सत्यता को जानकर तुम्हारे हृदय को फिर भ्रम का दुख नहीं उठाना पड़ेगा; क्योंकि वस्तु-स्वरूप जानने से इस बात का पता लग जाएगा कि सब पदार्थ तुम्हारे आधीन हैं"।
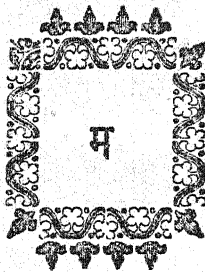
मनुष्य में उत्पादनशक्ति क्या वस्तु है? केवल विचार शक्ति। विचार करना क्या है? उत्पादनहै। इस प्रकार हमजीवन पर्य्यन्त उत्पादक रहे हैं वरन हमें इसका कुछ भी पता नहीं। हमने समझा था कि उत्पन्न करने की शक्ति कोई अद्भुत और अनोखी वस्तु होगी जिसको कि हम बड़ी खोज के बाद किसी दिन बाहर से पाकर ग्रहण करेंगे। हम यह नहीं जानते थे कि जिस वस्तु की तलाश में हम बहुत दिनों से थे वह हम में सदैव से मौजूद है और हर समय हमारे साथ रहती है। बात केवल इतनी है कि समुदायरूप शक्ति होने, उचित रीति से काम में लाए जाने और मतलब के लिए काम में लगने के बजाए जल-प्रपात की भांति वह निरन्तर नष्ट होती रही, वह उत्पादन शक्ति होते हुए भी हमारे जीवन को निरर्थक

और बेकार बनाये रही। दिन आया, दिन गया, ईश्वर ने इतवार छुट्टी का दिन दिया इत्यादि प्रकार का जीवन रह गया। अन्य समय में जब हम इसको काम में लाए भी तो बुरे कामों में। हमने अपने मन को रोग और शोक में, दुःख और विपत्ति में, पश्चात्ताप और प्रलाप में लगाया। मानो ये मनुष्य के भाग्य में ही हैं। वास्तव में हमने स्वयं इन चीजों को पैदा किया और विचार की उत्पादन शक्ति द्वारा अपनी ओर आकर्षित कर लिया। मन उत्पादक है। इस कथन की सत्यता जितनी हम माने उतने ही अच्छे अच्छे विचार और योगावस्था हम उत्पन्न करेंगे; परन्तु यदि मन द्रुतगामी घोड़े की भांति हो जो दाँतों के बीच लगाम होने पर भी क्रोध और अहंकार भय और भ्रम के कारण वेग से दौड़ा चला जा रहा है, तो उससे उसकी भी वैसीही अवस्था हो जायगी; कषाय से दुःख और रोग उत्पन्न होगा। क्रोध से आत्मा में क्रूरता और शरीर में कठोरता आती है जिससे जीवन महा दुखमयी हो जाता है और बहुत विपत्ति और रोग का कारण होता है। भय और घबराहट से काम में असफलता और दरिद्रता का चित्र सामने आता है और यह समझने लगता है कि मैं अभागी हूं, निर्धनी हूं। फिर इस विचार का उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

एक बार एक छोटा सा जल-प्रपात किसी पहाड़ी से नीचे बह रहा था। इसका उद्गम उस पहाड़ी के ऊपर था और इसका जल नीचे बहकर समुन्दर की ओर जा रहा था। उसको बहते हुए युग व्यतीत हो गए परन्तु किसी को इस बात का ज्ञान स्वप्न में भी न हुआ कि पानी की उस धारा में कोई

शक्ति छिपी हुई है। एक दिन एक व्यक्ति ने, जो अपने मित्रों से ज्ञान में कुछ बढ़ा चढ़ा था, यह देखा कि उसमें एक शक्ति छिपी हुई है इसलिए उसका बहाव नियम पूर्वक अपने आधीन किया जाए, ऐसा विचार कर उसने इस कार्य को अपने हाथ में लिया और उस पर बांध बनाए और जलाशय बंधवाए। उसने इन्जिनघर बनवाए और पानी उठाने के लिये पहिए खड़े किये। फिर क्या था उस छोटे चश्मे ने जो कि शताब्दियों से पहाड़ के नीचे निरर्थक बह रहा था, एक महान् शक्ति धारण की। उससे अब कितनी ही आटा चक्की चलने लगी, बड़े बड़े गहिरे जलाशयों में पानी जमा करके लोगों को पहुंचाया जाने लगा और उसी के ज़ोर से बिजली की शक्ति भी पैदा की गई जिससे शहरों की गलियां और मकानात रोशन हुए। इस सबका प्रधान कारण एक वही व्यक्ति था जिसने कुछ विचार करने का कार्य किया था। हज़ारों मनुष्यों ने यह जल-प्रपात देखा परन्तु कुछ न देखा। हाँ एक मन था जिसने वह धारा देखी और उसकी अव्यक्त शक्ति और उस शक्ति का प्रयोग और कार्य देखा; उसने देखा कि शताब्दियों से एक बड़ी काम देनेवाली वस्तु निरर्थक पड़ी है और राह देख रही है कि मनुष्य मुझको जाने, उसके मनके चित्र ने उस वस्तु को उत्पन्न किया जिसका वह चित्र थी। इसी प्रकार मन भी सोते की भांति चलता रहता है और जीवन की पहाड़ी से नीचे उतरते हुए अपने आप को नष्ट कर रहा है और मन के स्वामी को पता नहीं है कि मैं किस शक्ति का स्वामी हूं; परन्तु इतस्ततः कुछ स्त्री पुरुष सचेत हो रहे हैं और विचार करना आरम्भ कर रहे हैं। वे प्रश्न करते हैं, प्रकाश

की खोज में हैं। वे इस बात को समझ रहे हैं कि मनुष्य की आत्मा का आत्मत्व क्या है और यह समझ रहे हैं कि मैं क्या हूं? और इसका फल यह है कि वे सुखी और आनन्दित करने के लिए उत्पाद-शक्ति को प्रयोग में लाने का उद्योग कर रहे हैं। अब उन्हें मालूम हो रहा है कि वे जीवन समुद्र में बहते हुए काष्ठ की भाँति भाग्य और परस्थितियाँ रूपी लहरों के आधीन नहीं हैं। उन्हें मालूम हो गया है कि हम अपने भाग्य और बाह्य परस्थितियों के निर्माता स्वयं ही हैं और हमीं अपने विचार-स्रोत पर पूर्ण अधिकार रखते हैं। हमही उनके मार्ग को अपनी इच्छानुसार बदल सकते हैं; हमही खराबी को दूर कर सकते हैं और उसको सन्मार्गों पर लगा सकते हैं। वे यह मालूम करने लगे हैं कि हमारे भीतर एक शक्ति विद्यमान है जिसको उचित मार्ग पर लगाने से हमें सब प्रकार का सुख और शांति मिल सकती है।

जब मनुष्य को इस सत्यता का पता लग जाता है तो उसे कैसी खुशी होती है। इस बात के जानने के आनन्द का क्या कहना कि हमारा जीवन भी उतना ही अच्छा और उत्तम बन सकता है जितना कि हमारे पड़ोसियों का है। हमारे नेत्र खुल गए हैं और अब हम देख सकते हैं कि हम निर्धन केवल इस कारण से रहे हैं कि हमने उस भलाई को नहीं प्राप्त किया जो कि हमारे चहुंओर थी। ठीक बात है उस समय हमारे नेत्र ऊपर को उठे हुए थे इससे हमने उसको स्वप्न में भी नहीं देखा। हमने एक बार भी इस बात पर विचार नहीं किया कि सूर्य का प्रकाश हमारे लिए परिमित है या नहीं जब कि दूसरे उसकी जीवन-प्रद-रश्मियों का भण्डार रखते हैं।

हम जानते हैं कि सूर्य सब के लिए प्रकाशित होता है और जितनी उष्णता और ज्योति की हमें ज़रूरत है, हम उससे पा सकते हैं। हमें इस बात का स्वप्न में भी विस्मय नहीं हुआ कि वायु जिसमें कि हम स्वांस लेते हैं, कहां से आती है। उसके विना हम एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते। जिस भोजन और जल की हमें आवश्यकता होती है उस पर भी कुछ विचार नहीं करते हैं। कैसा आनन्द हो यदि हम जान जायें कि केवल सब हवा ही हमारी नहीं है जिसकी हमको आवश्यकता है; यह धूप ही हमारी नहीं है और यह अन्न जल ही हमारा नहीं है किंतु इतना ही और इसी प्रकार हर एक लाभदायक कार्यकारी वस्तु भी हमारी है।

जिस किसी की हमें इच्छा है और जिस वस्तु को हमारा मन इच्छा करता है, जो कुछ भी भलाई हमारे साथ चाहते हैं, जिस किसी भी पद पर हम पहुंचना चाहते हैं वह सब हमारा है। अर्थात् मेरा भी और आपका भी। और यदि हम विचार पूर्वक रहें, सचेत होकर रहें; जोश के साथ रहें और दृढ़ता से रहें तो इन बातों का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ेगा क्योंकि कहा है, "जाको जापर सत्य सनेहू, सो तिहि मिलत न कछु सन्देहू"।

——:o:——

३.—विचार शक्ति जादू है ।

संसार में सब से बड़ी शक्ति जहां तक मनुष्य का सम्बंध है विचार शक्ति है । विचार के कारण ही मनुष्य श्रेष्ठ बन जाता है और इसी के कारण वह नीच और अधम हो जाताहै । मनुष्य ऐसा ख्याल करते हैं कि उनकी उन्नति और अपने साथियों से आदर व सत्कार किसी शक्ति-वान व्यक्ति की कृपा से या परस्थितियों के द्वारा प्राप्त होती है परंतु ऐसा नहीं है । जो ऐसा ख्याल करते हैं यह उनकी बड़ी भारी भूल है । जैसे मनुष्य अपने विचार प्रगट करता है उसी के अनुसार उसकी उन्नति या अवनति देखी जाती है और उसी के अनुसार उसमें आत्मबल पाया जाता है ।

"मनुष्य अपने विचारों का फल है" इस बात को महर्षियों ने, कई युग हुए, कह दिया था; परंतु बड़ा ही अचरज है कि इतना भारी समय बीत गया ; परंतु इस विचित्र सत्यता का पता बहुधा मनुष्यों को नहीं लगा । हम ने विचित्र इसको इस लिए कहा है कि इसका सम्पूर्ण अर्थ विचित्र है मनुष्य

अपनी वसीयती, स्थिति, वंशावली, बाह्यक्षेत्र और कुछ बाह्य शक्ति का जिस पर वह अपने जीवन, चरित्र, सौभाग्य और दुर्भाग्य का भार सौंपते हैं, विचार सैकड़ों वर्षों से करता चला आता है। अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए मनुष्य कभी इस वस्तु को दोष देते हैं और कभी उसको और सदा अपने बाहर उसके कारणों को ढूंढा करता है, किंतु बात यही है कि अपने भाग्य के बनाने वाले स्वयं आप हैं। प्रत्येक समय मनुष्य अपने आप को बनाते रहते हैं। मूर्ख अविश्वासी व्यक्ति भी अपने ही विचारों का उत्पादन है।

मनुष्यकेवल अपने ही नीच, घृणित और बुरे विचारों के कारण नीच, घृणित और बुरा बन जाता है कमज़ोर और अस्थिर विचारों के कारण मनुष्य निर्बल और चल-प्रकृति बन जाता है। यदि तुम किसी दिन कहीं पर भी मनुष्यों के हृदयस्थ विचारों का पता लगाना चाहते हो तो उनके चेहरे को देखकर फौरन पता लगा सकते हो कि यह मनुष्य अच्छे विचार वाला है या बुरे।

उदास चेहरे को देखो जिसके पीछे दिमाग़ है जिसमें एक के पीछे एक मूर्खता के विचार उठते हैं और ग्रीष्मऋतु के बादलों की भाँति भागते हुए चले जाते हैं। कोई भी विचार क्षण भर के लिए नहीं ठहरता किंतु एक ओर से आता है और दूसरी ओर चला जाता है।

यदि तुम किसी उदास और हततेज चेहरे की ओर देखो जो कि भोग विलासों और बुरी आदतों के कारण बिगड़

गया है तो तुम फौरन उसमें रहने वाले विचारों का ठीक ठीक पता लगा सकते हो।

लेकिन किसी किसी का यह भी कहना है, कि मुख देख मनुष्य के अन्तर्गत विचारों का पता लगाने मे कभी कभी भूल होन सम्भव है; परंतु मेरे ख्याल से कभी भी भूल नहीं हो सकती। पवित्र और उत्तम विचार से कभी बदमाश कैसा चेहरा नहीं हो सकता और न आत्मा त्याग और संयम से शराबी कैसा चेहरा हो सकता है। प्रकृति में कभी भूल नहीं देखी जाती। हमको उसका कौड़ी कौड़ी बदला चुकाना पड़ता है।

क्या अच्छा हो यदि एक एक पुरुष को पकड़े और उनसे कहें, देखो भाई, तुम्हारे पास पारस पथरी है और इस अमूल्य शक्ति की सहायता से जो कि तुम्हारे पास है, तुम अपने जीवन की कुल नीच धातों को स्वर्ण में परिवर्तित कर सकते हो।

हां तभी तो अगर कोई यह कर सके। यदि किसी ने कभी ऐसा किया हो तो पागलपन समझा जाएगा, परंतु यह सत्य है कि मनुष्यत्व में यह द्योतक और परिवर्तन करने वाली शक्ति है। शोक है वे नहीं जानते।

जिस बात को नेता और शिक्षक लोग नहीं जानते, भला उसको अन्य पुरुष कैसे जान सकते हैं। प्रत्येक सभा सोसायटी और गिर्जाघर में यह बात अवश्य सुनने में आती है कि

यह करो, वह करो, परंतु उस अमूल्य रत्न के बाबत कुछ भी सुनाई नहीं देता जोकि हमारे हृदय में छिपा हुआ है और उसको पहिचानने की आवश्यकता है ।

मुझे प्राय: इस पर बड़ा अचम्भा होता है कि क्या फल होगा यदि कुछ साहसी धर्म गुरु अपना साधारण उपदेश देने के बजाय जिसका लोगों पर बहुत ही कम प्रभाव पड़ता है यदि जोर के साथ यह कहें, ' घर जाओ और विचार करो ' यह कितनी बड़ी शिक्षा होगी ।

मनुष्यों को विचार करने का ढंग बतलाना चाहिए इसकी बड़ी आवश्यकता है । यह विचार तो सीधा है परंतु जब जनता के लिए इस नियम का उपयोग किया जाता है तो यही सबसे बड़ी आपत्ति उपस्थित होती है । मनुष्य कब देखेंगे और जानेंगे कि उनकी सफलता कार्य में नहीं है बल्कि कार्य की विधि में और विचार ही विधि है ।

मनुष्य वैसा ही होगा जैसा उसका विचार होगा किसी बात के ऊपर गम्भीर और पूर्ण विचार करो । यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे मस्तक में विशेष प्रकार के विचार के लिए स्थान बन जांयगे । यदि तुम्हारे विचार गन्दे और तुच्छ होंगे तो उस समय उस स्थान को दूर करके बुरे विचार से छुटकारा पाना कठिन जान पड़ेगा । जो विचार बार बार मस्तक में उठा करता है वह लोहे की कड़ी के समान है जो तुम्हें दृढ़ता से उस वस्तु के साथ जकड़ता है जिसका तुमने विचार किया है । यदि तुम्हारे विचार गन्दे और घृणित हैं तो जितने बुरे और घृणित वे हैं उतने ही नीच और घृणित

तुम हो जाओगे। इससे तुम बच नहीं सकते। यदि तुम्हारे विचार पवित्र शुभ और अच्छे हैं, तुम सभ्य बन जाओगे, फिर तुम बिगड़ नहीं सकते। जैसा मनुष्य बिचारता है उसी के अनुसार वह बन जाता है।

—::o::—

४—इच्छा अथवा अभिलाषा।

तुम क्या चाहते हो ? इसको इस प्रकार भी कह सकते हैं कि तुम्हारी क्या अभिलाषा है ? जिसकी पूर्ण मनोबल से इच्छा अथवा अभिलाषा होती है हम उसके ऊपर विचार करते हैं और फिर उसकी पूर्ति के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं। हमें मालूम होता है कि इच्छा करते हैं; परन्तु जब हम अपनी इच्छाओं की भलीभांति परीक्षा करते हैं तो प्रायः देखते हैं कि वे हार्दिक नहीं हैं, अथवा हम किसी आदर्श की अभिलाषा करते हैं; परन्तु पूर्णरूप से विचार करने पर हम देखते हैं कि वह केवल बाहरी मन से हैं। हम उनको आसानी से छोड़ देते हैं। यथार्थ में हम यह करते हैं कि किसी वस्तु को चाहते तो बहुत हैं; परन्तु उस पर पूर्ण विश्वास नहीं रखते कि वह मिलेगी। इस प्रकार की इच्छा उत्पादक नहीं है। यह केवल चलतू भ्रम है जो पैदा होते ही नष्ट हो जाता है। इससे क्षणभर भी मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि ऐसी इच्छा या अभिलाषा हानिकारक होती है किन्तु मेरा यह विश्वास है कि चरित्र पर इसका प्रभाव अत्यन्त हानिकारक और बुरा पड़ता है।

यदि किसी मनुष्य की विचारशक्ति दृढ़ है, छाया मात्र नहीं और उसकी इच्छा संसार में भलाई करने की है तो उसको चाहिए कि वह अपने क्षणिक आशाओं और व्यर्थों के विचारों को एकदम दूर करदे। अधूरी इच्छा जो भ्रम से संयुक्त हो साल छह महीने तक अपने मनमें रखना और फिर उसको छोड़ दूसरी बात की इच्छा करने लगना शारीरिक बल को खोना है और शक्ति को क्षीण करना है और बराबर ऐसा करने से अन्त में किसी काम पर दृढ़ ध्यान लगाने की शक्ति सर्वथा जाती रहती है। इस प्रकार का मनुष्य कभी अपना अभीष्ट नहीं प्राप्त कर सकता। यह मनुष्य श्रेणी से गिर जाता है।

"जो मनुष्य अस्थिर चित्तवाला है वह समुद्र की तरंग के समान है जो वायु से विताड़ित होती रहती है। ऐसे मनुष्य पर परमेश्वर कभी दयादृष्टि नहीं रखता और न कुछ वह कृपा-पात्र होता है। छिन्नचित्त मनुष्य अपने सब कार्यों में अस्थिर रहता है"। इसलिए जो मन आज एक वस्तु की इच्छा करता है और कल दूसरी वस्तु की वही अस्थिर कहलाता है। ऐसा मन इच्छारूपी झोंके के साथ उड़ा करता है। जिस प्रकार जीवनरूपी समुद्र की वायु विताड़ित लहरों के ऊपर पतवार रहित नौका जिसका कि कोई निश्चित बन्दरगाह नहीं होता, डामाडोल होती हुई जिस चाहे ओर चली जाती है वही हाल मनुष्य के चंचल चित्त का है। ऐसा मनुष्य कभी परमेश्वर का कृपापात्र नहीं बन सकता।

एक प्रकार की इच्छा निराशाजनक भी होती है। यद्यपि ऐसी इच्छा अपने आप बलवती और सच्ची भी हो; परंतु साथ

ही इसके कभी कभी उसी के साथ निराशा भी होती है। कुछ समय हुआ, मैं एक आदमी से बातचीत कर रहा था। वह पुरुष बड़ा ही गम्भीर और शांत था। अपने जीवन के परिपूर्ण करने के लिए उसने किसी प्राप्ति की इच्छा की, परन्तु उसको विश्वास नहीं था कि ईश्वरीय नियम उसको कुछ प्राप्ति करा देंगे या नहीं। उसकी इच्छा के साथ ऐसी द्विविधा थी कि वह रोरोकर कहता था 'क्या रोने से चन्द्रमा हाथ में आ सकता है'। ऐसी इच्छा कभी पूर्ण नहीं हो सकती क्योंकि अविश्वास उसको नास्तिक अवस्था कर देता है और मनुष्य इच्छित वस्तु की प्राप्ति की ओर नहीं जाएगा और न उसको पाने का हार्दिक यत्न करेगा। यहां अब मुझे यह बतलाने दो कि कहीं मनुष्य ऐसा न समझ बैठे कि मैं यह शिक्षा दे रहा हूं "अपना मुंह खोलो, आंखें बन्द करो और फिर देखो ईश्वर तुम्हें क्या भेजता है।" यह बात मेरी सम्मति से विपरीत है। किसी चीज़ की इच्छा करने से मेरा अभिप्राय यह है कि कोई बड़ी सफलता की अभिलाषा हो और किसी उत्तम और उत्कृष्ट जीवन के अवसर और ईश्वर की कृपापात्रता के योग्य हों। मेरा अभिप्राय यह है कि अपने हृदय से वाहच किसी बड़े उत्तम पदार्थ की प्राप्ति का विचार हो कि हम तन मन से किसी लक्ष्यबिन्दु तक पहुंचने का यत्न करें। क्या यह सम्भव है कि इस प्रकार की उत्कट अभिलाषा रखते हुए तुम चुपचाप बैठे रहो और कुछ न करो। नहीं, नहीं तुम्हारा सारा जीवन काम करने में लगा ही रहेगा, लाचार तुमको आगे चलना ही पड़ेगा। इस कारण से अपने लक्ष्यबिन्दु तक पहुंचने के लिए हर प्रकार का यत्न करो। इस प्रकार तुम

निठल्ले और बेकार न रहकर काम करने के लिए सदैव तत्पर रहोगे और हाथ पर हाथ रक्खे हुए बैठे रहकर अभिलाषा पूर्ण होने की आशा न करोगे। मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि तुम्हारा परिश्रम विफल नहीं होगा। वह विफल हो नहीं सकता अवश्यमेव सफलता होगी।

वस्तु के भले बुरे मालूम करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि किसी वस्तु को पा.करके उसी से ठीक, ठीक अनुभव प्राप्त करो कि उसकी प्राप्ति लाभदायक है या नहीं। जिस वस्तु की तुम हमेशा इच्छा किया करते थे क्या वह तुम को नहीं प्राप्त हुई ? और इच्छा दृढ़ता पूर्वक हार्दिक थी तो तुम सदैव यह विचारोगे क्या अच्छा होता यदि मुझको वह वस्तु मिल जाती जिसे कि मैं इच्छा करता था तो मेरा जीवन सफलीभूत और आनन्दमय बन जाता। दृष्टान्त के तौर पर एक आदमी को लो जो बहुत धनकी इच्छा किया करता है, जो रुपये की गरज़ से रुपये की ओर ध्यान लगाए रहता है वह इस संसार के सब सुवर्ण की इच्छा इस अभिप्राय से करता है कि मैं अपने भाइयों से धनी हो जाऊँ। जब लखपती हो गया और दुःख तनिक भी कम नहीं हुआ तो अन्त में फिर वह सच्चे धन की ओर लगेगा जो कि शाश्वत और सुखकर है और जिसकी प्राप्ति से आत्मा को सब प्रकार का सुख और शांति मिलेगी।

——:o:——

५.—वाह्यक्षेत्र पर विचार का प्रभाव।

यह बात केवल मानी हुई है कि जीवन के सुख दुःख पर बाह्य क्षेत्र का बहुत भारी प्रभाव पड़ता है। इसके समझने के केवल दो मार्ग हैं। पहला तो यह कि कुछ व्यक्ति अपने को और दूसरों को बाह्य क्षेत्र का शिकार समझते हैं। जब वे अपने चारों तरफ़ दृष्टिपात करते हैं तो उन्हें निर्धनता, अपवित्रता और कुत्सित मकानात ही दिखलाई देते हैं और बहुत से मनुष्य अपने को शराब, तम्बाकू, बुरी संगति आदि में नष्ट करते हुए नज़र आते हैं। लोग इनको बुरे स्थानों में रहते हुए पाते हैं इस लिए इस बात को वे जल्दी ही कहने लगते हैं कि इनके बिगड़ने का कारण बाह्य क्षेत्र है। कुछ समय हुआ होगा जब कि एक दिन लेखक ने किसी को यह कहते हुए सुना था कि ऐसी अवस्था में मनुष्य कैसे अच्छी तरह रह सकता है। इन गलियों को देखो जहां पर कि उसका निवास-स्थान है, इन आदमियों को देखो जिनकी उससे संगत है। उस घर का भी मुलाहिज़ा करो जिसमें वह रहता है। बात यह है कि बाह्य क्षेत्र पर

दोष देने वालों को इस बात की तनिक भी ख़बर नहीं कि ऐसा बुरा स्थान उसने अपने आप ही चुना है और यह उसकी इच्छानुसार है । बाह्य क्षेत्र के कारण उसके बुरे साथी, मैला स्थान, बुरी अवस्था बाह्य कारण ने नहीं पैदा कर दी है किंतु यह बाह्य क्षेत्र की अवस्था उसने स्वयमेव पैदा की है । उसका बाह्यक्षेत्र ऐसा ही है तो यह उसकी ही भूल है । इस बात का सबूत तुम्हें उस समय मिल सकता है जब कि तुम शहर के किसी बुरे स्थान में जाओ और वहां के रहने वाले की हालत देखो । सामने शराबी खड़ा है । उसने शराब पीना और अपने बुरे साथियों का संग करना त्याग दिया है अब देखो वह प्रतिदिन प्रातःकाल तरोताजा दिमाग के साथ अपने काम पर जाता है । सप्ताह के अन्त में वह अपनी सात दिन की मज़दूरी घर लाता है और अपनी स्त्री, बाल बच्चों के लिए कपड़ा और भोजन खरीदता है और घर के लिए अच्छा २ सामान मोल लेता है । अब बतलाइये कि बाह्य क्षेत्र की शक्ति कहां भाग गई । कुछ दिनों के बाद वह तुम्हें यह भी साबित करके बतला देगा कि बाह्य क्षेत्र में रोकने की कुछ भी शक्ति नहीं है और उसी गन्दे स्थान से वह तुम्हें सुन्दर, दृढ़, स्वतन्त्र और प्रसन्न चित्त मनुष्य निकलता हुआ दिखलाई देगा और तुम्हें उस समय वह स्थान उसके जीवन और चरित्र के लिए उत्तम और उपयुक्त जान पड़ेगा । अपने आपको वश करने से मनुष्य बाह्य क्षेत्र का भी स्वामी बन गया है ।

साफ़ सुथरे मनुष्य को बुरे स्थान में रखना, गम्भीर और

शांत मनुष्य को मद्यपीने वालों के स्थान में रखना और अधिक परिश्रम करने वाले सच्चे, ईमानदार आदमी को नीच और गन्दे स्थान में रखना बड़ा ही असम्भव है। यदि तुम किसी व्यक्ति को इससे पहले जो परिवर्तन के लिए तत्पर नहीं है, अपने क्षेत्र से अलग करो और फल देखो क्या होता है। यह कि वह बाह्य क्षेत्र को अपने साथ ले जायगा और तत्काल उसको अपनी इच्छानुसार बना लेगा पहले आदमी के विचार बदलो तो बाह्य क्षेत्र बहुत जल्दी बदल जाएगा।

बाह्य क्षेत्र के जानने का एक मार्ग और है जिसको हमें नहीं भूलना चाहिए। हरएक आदमी ने शिक्षित मनुष्यों को जिनको सब प्रकार के सुभीते हैं, जो अच्छे स्थान में रहते हैं और जिनके सभ्य और शिक्षित मित्र हैं, यह शिकायत करते सुना होगा कि "हम अपनी योग्यता के अनुसार अच्छे क्षेत्र में नहीं हैं, परस्थितियां हमारे अनुकूल नहीं है। उनका कार्य हमारे अनुकुल न होने से हम दुःखी रहते हैं और इसी से हम इसको घृणा की दृष्टि से देखते हैं इस कारण हम न कुछ सामाजिक, आर्थिक अथवा आत्मिक उन्नति का, जिनको कि हमें आशा थी और अब भी आशा रखते हैं, उपाय करते हैं"। ऐसेही आदमी ने एक बार मुझे लिखा था कि "दूसरे मनुष्य तो सफलता प्राप्त कर रहे हैं, उन्नति कर रहे हैं, मौका पा रहे हैं, हर्ष और आनन्द लूट रहे हैं, परन्तु हम इन सबसे वंचित हैं सो क्यों? मैं अपने काम को इतने वर्षों से कर रहा हूं और मुझे वे पसन्द नहीं हैं।" बस सारा भेद इसी में है कि मैं अपने को पसन्द नहीं करता। उस महाशय को हमने लिखा

"कि देखो उस काम में जो तुम करते रहे. आपको कितने अच्छे अच्छे अवसर प्राप्त होते रहे जहां आप अपनी शक्ति और योग्यता को दिखला सकते थे। यह बाह्य क्षेत्र से सहानुभूति न रखने का कारण तुमको जीवन में बाधा डालता है। काम को घृणा की दृष्टि से देखने, काम से हटाकर मनको दूसरी ओर लगाने, अपने साथ में काम करने वालों को कुदृष्टि से देखने से तो यही अच्छा है कि आत्म-निरीक्षण करो, प्रतिदिन ध्यान करो इस अभिप्रायसे कि तुमको मालूम हो जावे कि वही काम जिससे घृणा थी, कैसा अच्छा है।" उसने मेरी शिक्षा को ग्रहण कर लिया और उसी के अनुसार चलने लगा। थोड़े ही समय के बाद परिणाम बड़ा बिचित्र निकला। शुभ दिन उदय हुआ जिस कार्य से पहिले वह बड़ी घृणा किया करता था अब उसी से उसे आनन्द मिलने लगा। उसकी परस्थिती जादू के असर की भांति बदल गई और मित्रा मे बहुत उम्दगी दिखाई देने लगी जो पहले स्वप्न में भी नहीं दीखती थी। लाभदायक अवसर उसे दिखलाई देने लगा। इसलिए अब उसे जिस वस्तु को जरूरत होती थी, मिल जाती थी। उसने अपनी अन्तरात्मा बदल दी तो देखो उसका बाह्यक्षेत्र उसके अनुसार हो गया। उसने इस बार लिखा कि मैं बिलकुल ही बदल गया और अब मुझे उसी क्षेत्र में प्रसन्नता, हर्ष और सुन्दरता दिखलाई देने लगी जिसमें पहले कष्ट, दुख और आपत्ति जान पड़ती थी यह सब अन्तरंग के बदलने से हुआ अन्य किसी से नहीं।

इस बात पर विश्वास रक्खो कि यदि हम वर्तमान

स्थिति में नहीं उन्नति कर सकते। तो फिर किसी भी स्थिति में उन्नति नहीं कर सकते। इस बात को बहुत सी पुरुषों ने अनुभव किया है किन्तु लेखक ने तो कई बार किया है कि सुख और सफलता जिसकी इच्छा थी उसी काम में और उसी क्षेत्र में विद्यमान है जिससे मनुष्य भागना चाहता था। सुख और सफलता हमारे पैरों तले ही दबी थी जिसका हमने ख्याल नहीं किया था। जिस काम को तुम कर रहे हो उसी में अच्छाई, और जहां कहीं भी तुम हो वहीं जय लाभ करो सच्चे हृदय के साथ परिश्रम करके काम को अच्छा बन ओ इससे तुमको अवश्य ही सुख और सफलता की प्राप्ति होगी।

जो आत्म-विजय करता है उसके लिए सब चीजें सिर झुकाए खड़ी हैं। उद्योगी मनुष्य को अवसर की कमी नहीं।

६—पारस पथरी

प्राचीन समय से मनुष्यों का यह विश्वास हो रहा है कि संसार में एक ऐसी वस्तु है कि जिसके प्राप्त हो जाने से मनुष्य लोहे को सोना बना सकता है और अपने अनेच्छुक और अप्रिय पदार्थों को जादू से सुख और सफलता के रूप में बदल सकता है। बहुत से स्त्री पुरुषों ने इसके अनुसन्धान में अपने जीवन तक को न्योछावर कर दिया है। बहुतों ने यह भी कह दिया है कि भेद हमको मिल गया है। और यहां देखो, वहां देखो इत्यादि वाक्यों को सुनकर बहुत से मनुष्यों ने पाने की आशा से उनका पीछा किया; परन्तु अन्त में जब खाली हाथ लौटना पड़ा तो बड़े हो हताश हुए। और उनका दिल एकदम गिर गया उन्होंने इसको किसी मनचले की गप्प समझ कर पता लगाना छोड़ दिया और यह सोच लिया कि पारस पथरी कोई वस्तु नहीं है। सबसे बड़ी भूल इसमें यह हुई है कि लोगों ने पारसपथरी को कोई बाहय पदार्थ समझ लिया उनका ख़्याल था कि यह कोई स्थूल पदार्थ होगा जिसको हम देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं और अपने साथ ले जा

जा सकता है। किसी किसी ने यह समझा कि यह कोई शक्ति है जिसके साथ मनुष्य का हृदय या मन संयुक्त होने की आवश्यकता है। यों तो मनुष्य किसी बात की खोज करे तो वह ऐसे मनुष्य अवश्य पाएगा जो कि उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर होंगे। जैसे गवांर लोगों को जादूगर बहकाकर यह कह देते हैं कि यदि तुम इतना सोना लादो तो हम तुमको सोना बनाने की तरकीब बता दें। उन भोले मनुष्यों की समझ में यह नहीं आता कि यदि यह सोना बना सकता है तो हमारे सोने की इच्छा क्यों करता है। ऐसे ही मनुष्य धर्म गुरू बन करके लोगों को ठगा करते हैं, उनको स्वयं रास्ते का पता नहीं, दूसरों को क्या बतावेंगे।

पारस पथरी ही एक ऐसी चीज़ है जो लोहे का सोना बना सकती है; परंतु वह अपने में ही है किसी बाहरी पदार्थ में नहीं। विचार-शक्ति के बाबत कई बार लिखा जा चुका है; परंतु फिर भी हमें यही मालूम होता है कि हमने अभी तक उसके बाबत कुछ भी नहीं लिखा है और न हमने इस अद्भुत विषय के ऊपर बड़े ज़ोर शोर से कुछ भी विवेचन किया है जब हम देखते हैं कि यह अद्भुत शक्ति सबके पास है, परंतु इसके अस्तित्व का हमको बिलकुल भी ज्ञान नहीं। हम बार बार बतलाना चाहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर यह भी कह देना चाहते हैं कि अब तुम इस विनश्वर संसार में उसको तलाश करना छोड़ दो और जान लो कि वह वस्तु जिसको कि तुम खोज में हो, पहले से ही तुम्हारे पास मौजूद है। वह तुम्हारी विचार शक्ति में है। "जैसा मनुष्य विचारता है वैसा ही हो जाता है।"

अब यह बात हमें अच्छी तरह समझ लेने दो कि जो कुछ है और जिस अवस्था में है वह सब अपने विचारों के कारण है। ऐसे ही विचार करते करते हम पारस पथरी को भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक नवीन शब्द या वस्तु का मूल उत्पादक विचार है। प्रत्येक वस्तु जो तुम अपने पास देखते हो वह विचार का ही फल है। कारीगर के विचार का फल घर है। पहले उसके दिमाग़ में घर का चित्र बना होगा। बन के रक्षक के मन में भी पहिले जंगल के बाबत विचार उठा होगा। इसी प्रकार माली के दिल में भी पहले बाग़ के बाबत विचार उठा होगा कि बगीचे में सुन्दर फल फूल उत्तम सड़कें और अच्छे चश्मे होने चाहिए'। यदि हम उन चीज़ों के विषय में विचार करें जो कि हमारे प्रयोग में आती हैं जैसे कपड़ा जो हम पहिनते हैं और मेज कुर्सी जो हमारे काम में आती हैं क्या यह सब किसी दरजी या बढ़ई के मन ने नहीं गढ़ी हैं। हमें यही मालूम देता है कि उनके बाबत भी पहले नवीन विचार उठा होगा, तब कहीं वह वस्तु बनी होगी। पहले मन रूपी नेत्र के सामने प्रत्येक वस्तु का ठीक ठीक ढांचा खिच जाता है बाद को वह वैसी ही देखने में आती है। यह सब तो तुम मानने के लिए तैयार हो परंतु यह तो बताओ कि जीवन की बुरी दशा, भय, दुःख, निर्धनता तथा जर्जरित शरीरों का क्या कारण है। ये भी सब विचारानुसार हैं। ये सब हमारे लगातार विचारों का फल है हमें यह बात भली भांति ज्ञात

है कि बहुत से मनुष्य भयानक विचार के साथ जीवन व्यतीत करते रहें कि जिससे उनके शरीर निर्बल और कमज़ोर देखे जाते हैं । वर्षा का डर कि कहीं हम भीग न जाँए और जुकाम हो जाए। हवा का भी डर कि यदि यह पूर्व से चली तो ठन्डी होगी, यदि यह उत्तर से बही तो दुःखदाई होगी, यदि दक्षिण से चली तो शक्ति प्रवल कर देगी और यदि यह पश्चिम से बही तो निश्चय से पानी लाएगी । यदि सूर्यदेव का प्रकाश हुआ तो पर्दे और चिकें पड़ने लगी कि कहीं धूप न आ जाए। वे इस द्विविधा में पड़े रहते हैं कि यह चीज़ खाएँ या वह जिससे शरीर को बाधा न पहुंचे। उन्हें व्यायाम तथा आराम करने का भी भय लगा हुआ था कि ऐसा न हो कि कहीं इनकी कमी या ज्यादती से हानि पहुंच जाए । इसी प्रकार के कमजोर और लाचार बिचारों के कारण जो कि उनके दिमाग़ में दिन प्रति दिन और साल दर साल उठते रहे, उनके शरीर कमजोर और क्षीण हो गए और बेकुरूप भी हो गये जिससे मनुष्य डरता है वही आगे आता है। शोक है उन मनुष्यों के जीवन पर जो उसको भय के साथ प्रतीत करते हैं।

यदि मनुष्य अच्छे और शुभ विचार करें तो उनकी दशा बहुत ही शीघ्र बदल सकती है। यही नियम सबके साथ लागू हो सकता है। स्त्री पुरुष निरन्तर निर्धनता का विचार किया करते हैं, उसी के बाबत बातचीत किया करते हैं और वैसे ही कार्य करते हैं इसी लिए निर्धनता उनको आ दबाती है। उनके घर में अपना विश्राम कर लेती है। कुछ मनुष्य बुरे स्वास्थ्य

का निरन्तर विचार किया करते हैं और दुख वा क्लेश के विषय में बात चीत किया करते हैं, कभी शिर के दर्द की शिकायत कभी बुखार की किया करते हैं नाड़ी कुछ कम चलती है, हाथ पैरों में गर्मी है । यहां तक कि धीरे धीरे वे एक दिन महा रोगों के शिकार बन जाते हैं । उस समय उन्हें सहानुभूति की ढूंढ होती है और पूछा करते हैं, भाई क्या करें कुछ ईश्वर हमसे रुष्ट है, हम बड़े दुख में पड़े हैं । मित्रों से सहायता चाहने की इच्छा रखते हैं । उनके ऊपर दया और सहानुभूति दिखलाना हमारा कर्तव्य है उनके मन की बुरी स्थिति उनको दया का पात्र बनाती है ।

परन्तु मनुष्यों को कौन सचेत करे और उनको विचारवान बनावे । जो वक्ता या लेखक होते हैं उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि मनुष्य अपने पुराने रीति को क्यों तोड़ सकता है । उनके हृदयों को उदार और विशाल बना देवें कि वे उस सत्य को ग्रहण करें जो कि अपने अनुभव और अपने जीवन ने दिखाया है कि विचार में बड़ी शक्ति है । यह प्रत्येक बालक, युवा और वृद्ध मनुष्य में पाई जाती है और जो चाहे अभीष्ट के साधन में लगाई जा सकती है । प्रत्येक मनुष्य की विचार शक्ति उसी की है और उसका फल भी वही मनुष्य भोगता है उसको दूसरा व्यक्ति न रोक सकता है और न बिगाड़ सकता है ।

मेरे प्रिय पाठकों । चाहे तुम कोई हो और किसी स्थिति में भी हो, किन्तु पारस तुम्हारे पास है । तुम आज ही से अपने जीवन, मन, शरीर और परस्थिति को सुधारना प्रारम्भ

कर दो तो धीरे धीरे निश्चय से तुम्हारा जीवन सुन्दर, सुखद और स्वर्णमय बन जायगा ।

अपने दुःख और क्लेशों से, अपनी मूर्खता से, अपनी बाधाओं से जल्दी बन्धन मुक्त होने की आशा मत करो । जब कि हमने दस, बीस, पचास वर्ष ऐसे जीवन के बनाने में व्यतीत किये जोकि सुन्दर, शांत और सुफल नहीं है । अब यह कैसे आशा हो सकती है कि झटपट परिवर्तन हो जाए । बहुत से बुरे विचारों को मस्तक से निकालना होगा, बहुत कुछ बिगाड़ना होगा तब कहीं जीवन सुधरेगा ।

सम्भव है कि कई वर्षों तक तो तुम्हें कुछ भी उन्नति नहीं मालूम हो; किन्तु तुम्हें यह अवश्य ज्ञात होता रहेगा कि कार्य हो रहा है और तुम यह मालूम करोगे कि देर या सबेर हर प्रकार की बाधा और आपत्ति का पहाड़ आप से आप ही दूर हो जाएगा और तुम्हारी अन्तरंग शक्ति के सामने कुछ भी नहीं ठहर सकेगा । जिस अच्छी बात का तुम विचार कर रहे हो और जिसकी प्राप्ति का तुम उपाय कर रहे हो वह तुम्हें अवश्य मिलेगी । इस छोटे से जीवन के लिए अपने विचारों को संकीर्ण मत बनाओ । जो कुछ तुम अभी सोचकर संसार में विचार उत्पन्न कर रहे हो वह आगामी में कितनेही मनुष्यों को काम देगा । आज बोओगे तो कल्ल अवश्य अनाज उत्पन्न होगा ।

ईमरसन साहब ने क्या अच्छा कहा है "मैं संसार का अधिपति हूं सातों तारे और वर्ष मेरे हाथ में है । कैसर की शक्ति, अफलातून की समझ, ईसा का दयामयी हृदय और सेक्सपियर के हृदय की तरंग मेरे में मौजूद है ।"

७.—अपनी सब प्राप्ति के साथ ।

जब उस मनुष्य को जोकि सुख और शान्ति की गुप्त शक्तियों को खोजने वाला है यह सीधी परंतु महत्व की बात कि विचार में कितनी शक्ति है, पहले पहल बतलाई जाती है तो एक प्रकार का डर है। वह ऐसी बात है कि हर एक को समझ लेना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि लाभ के स्थान में हानि उठावे, क्योंकि मनुष्य यदि शक्ति का ठीक ठीक प्रयोग करना नहीं जानता अथवा जानकर भी कुछ नहीं करता, तो फिर वही शक्ति उसके नाश का कारण हो जाती है। उसका चित्त इस शक्ति को स्वार्थ साधन में लगाने की प्रेरणा करता है और ऐसा करने से उसको अन्त में क्षति होती है।

यह बात निरर्थक नहीं है कि प्रत्येक मनुष्य में जो शक्तियां जन्म से ही मौजूद हैं उनसे बहुत से मनुष्य अनभिज्ञ रक्खे गए हैं। संसार के धुरन्धर गुरुओं ने मनुष्यों की समझ के अनुसार उनको इस शक्ति का उपदेश दिया है। जो अच्छे

गुरु हैं वे अपने शिष्यों को इतना ज्ञान देते हैं जितना उनके शिष्य भली भांति प्रयोग में ला सकते हैं। प्रत्येक मनुष्य उस बुद्धिमान के सदृश उत्तर नहीं दे सकता कि जब उस आत्मा पर दिव्य-ज्योति का प्रकाश पड़ा और जब उसे दैववाणी यह कहते हुए सुनाई दी कि तुम क्या चाहते हो। उसने उत्तर दिया, मुझे बुद्धि और ज्ञान दो। और उसने यह स्वार्थ साधन के लिए नहीं मांगा किन्तु जनता की भलाई, शान्ति और सुख के लिए मांगा। आजकल के बहुत से मनुष्य तो अपने गुरू से कोई बेटा, कोई धन और कोई स्त्री मांगते हैं और स्वार्थ साधन में ऐसे लीन हैं कि ज्ञान प्राप्ति तक उनका ध्यान ही नहीं पहुंच सकता।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि विचार की उत्पादक शक्ति बड़ी ही प्रबल है इसके द्वारा पुरुष अथवा स्त्री अपने को जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं और इसमें भी सन्देह नहीं कि हम अपने को प्रतिदिन कुछ न कुछ बना रहे हैं। यह बात सत्य है कि हमारी परिस्थितियों हमारे वाह्य क्षेत्र हमारे अनुभव और हमारे सम्बन्धों का हमारे चहुं ओर के आदमियों और पदार्थों से बहुत सा ऐसा सम्बन्ध है कि इसमें हम चाहते हैं कि एक साथ परिवर्तन हो जावे और जैसे के तैसे न रहें किन्तु हमारी इच्छानुसार बनजावें; ऐसा करना कार्य कारण के नियम को तोड़ना होगा।

प्रत्येक मनुष्य का विचार उसके जीवन का निर्माता और कर्त्ताधर्त्ता है। यह बात कुछ विचित्र मालूम होती है परन्तु बिल्कुल सत्य है किन्तु कभी मनुष्य इसका ध्यान नहीं रखते और

न इसके बाबत कुछ विशेषकर धर्मायतनों में ही शिक्षा दी जाती है और बहुत कम लिखा भी गया है। कुछ शताब्दियों के बाद अब यह बात फिर हमारे सम्मुख आई है। इसको कुछ मनुष्य नया समझते हैं और कुछ धर्म विरुद्ध बतलाते हैं। बात असल में यह है कि यह बात तनिक भी नई नहीं है। ईसा के पांच सौ वर्ष पहले बुद्ध भगवान ने इस बात का उपदेश दिया था और अन्य धर्म गुरूओं ने भी यह बात बतलाई थी। उनके कथन में तनिक भी आशंका नहीं हो सकती।

जो विचार हमारे मस्तक में है उसी ने हमको बनाया है। विचारों के अनुसार ही हम बनाए गए हैं। यदि मनुष्य के विचार तुच्छ और घृणित हैं तो उसके पीछे दुख या क्लेश इस प्रकार लगा हुआ है जिस प्रकार बैल के पीछे पहिया लगा रहता है। परंतु यदि किसी के विचार विशुद्ध और पवित्र हैं तो सुख उसका इस प्रकार साथ देता है जिस प्रकार मनुष्य की छाया मनुष्य का साथ देती है।

जैसा तुम दूसरों से कराने की इच्छा रखते हो वैसा तुम भी उनके साथ करो क्योंकि यह एक प्राकृतिक नियम है।

जो तुम दोगे वह तुम्हें भी मिल जाएगा। यदि तुम दूसरों के साथ उपकार करोगे तो वे तुम्हारे साथ भी उपकार करेंगे।

देह के साथ मोह मृत्यु समान है और आत्मिक विचार सुख शान्ति की जड़ है।

जेम्स एलन का कथन है कि विचार का फल तो कार्य है; परंतु सुख दुख उसके फल हैं । अतः अपने ही खेत के सुख दुख रूपी भले और बुरे फलों को मनुष्य बटोरता है ।

विचार क्षेत्र में कारण और कार्य का नियम ऐसे ही अटल है जैसे कि बाह्य क्षेत्र के संसार में । जिस प्रकार संसार में प्रत्येक वस्तु के साथ कार्य कारण भाव लगा हुआ है उसी प्रकार हमारे विचारों के साथ भी लगा हुआ है ।

मनुष्य अपना निर्माता है । उसका विचार उन यन्त्रों को अपने शस्त्रालय में गढ़ता है जो उसका नाश करते हैं । उसी कार्यालय में वह ऐसे यन्त्र बना सकता है जिससे स्वर्गीय सुख शान्ति तथा अन्य शक्तियां प्राप्त हों ।

आत्मा के विषय में जो अच्छी अच्छी बातें इस समय में प्रगट हुई हैं उनमें से सब से उत्तम सुख को देनेवाली इसके सिवाए कोई नहीं है कि मनुष्य अपने विचारों का स्वामी है, अपने चरित्र का निर्माता है, और अपनी स्थिति, अपने बाह्य क्षेत्र और अपने भाग्य का कर्त्ता है ।

तब यह बात बहुत ही आवश्यक है कि हमको अपनी विचार शक्ति का ज्ञान होना चाहिए हमें धिक्कार है यदि हम अपनी विचार शक्ति को स्वार्थसाधन में लगाएँ । इसमें सन्देह नहीं यदि हम अपनी विचार-शक्ति को पूर्णरूप से स्वार्थ सिद्धि में लगा देंगे तो उससे हमारी इच्छाएँ पूर्ण हो जायगी परंतु इस बात का हमें बहुत ध्यान रखना चाहिये कि हमारी इच्छित वस्तु जब मिले तो हमें लाभदायक हो तथा आगामी हानि का डर न रहे ।

हमको अपना उद्धार अपने आप करना चाहिये और उसी में सन्तोष कर लेना चाहिए। सारांस यह है कि यदि हमको यह मालूम हो जाए कि यह बात हम में पूर्व-कर्म और पूर्व-विचार के कारण हुई है तो हमें उसका रत्ती रत्ती भर बदला चुका देना चाहिए परन्तु बदला चुकाते समय अपने मन को शुभ विचारों की ओर लगाना चाहिए जिससे भविष्य में हर्ष और आनन्द मिले। यदि हमारे हाथ में आज कांटा चुभे और यधि हम उसके कारण को मालूम करें तो हमें ज्ञात हो जाएगा कि हमारे इस दुख का बीज हमीं ने बोया है। चाहे इसे थोड़े दिन हुए हों या बहुत दिन ; परंतु बोया हमीं ने है। कार्य कारण के नियम पर विचार करते हुए भी हमें यही समझ में आता है कि हमारे दुख का बीज अवश्य ही अतीत काल में बोया गया होगा। यदि तुम विशुद्ध-निर्मल प्रेम, प्रीति और प्रसन्नता के विचार को मन रूपी भूमि में बोओगे तो उससे तुम्हें अच्छे फल मिलेंगे और हर्ष तथा आनन्द के कारण तुम उन दुखों को भी सहन कर लोगे जिनका बदला अभी तुम्हें चुकाना बाकी है और वे दुख शनैः शनैः जाते रहेंगे।

क्या तुम अपने जीवन को सारयुक्त और सुख मय बनाने के लिए भलाई, सुन्दरता और प्रसन्नता को चाहते हो ? क्या तुम ऐसे ज्ञान और शक्ति को प्राप्त करना चाहते हो जिससे तुम्हारे साथी तुम्हें विश्वासपात्र समझें और तुमसे बहुत लाभ उठा सकें ? इसका तुम रात-दिन चिन्तवन करो, पवित्र और विशुद्ध विचारों की ज्योति निरन्तर तुमको घेरे रहे,

उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करो, अपने अभीष्ट को सदैव सामने रक्खो और बड़े भारी धैर्य और सन्तोष के साथ वैसा ही जीवन बनाने के लिए अपने विचारों पर डटे रहो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम एक अच्छे प्रभात के दर्शन करोगे और तुम्हारी अभिलाषा पूरी होगी। केवल अपने को उसके योग्य बनाओ।

'जो इच्छा करिहो मन माहीं, राम कृपा कुछ दुर्लभ नाहीं' उसके लिए यत्न करो, उस पर विचार करो, उसके लिए तैयार रहो, काम करो, तत्पर रहो और आशा रक्खो और कृतज्ञ बनो। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति रास्ते पर है और शीघ्रता के साथ तुम्हारे पास आ रही है जैसी शीघ्रता से तुम्हारा मन उसको ला रहा है उतनी ही जल्दी वह तुम्हारे पास आ जाएगी।

जो कुछ भी तुम चाहते हो, जब तुम प्रार्थना करोगे, विश्वास रक्खो तब वह तुम्हें मिल जाएगा और तुम उसके मालिक बन जाओगे।

जो वरदान तुम्हें पहले से मिले हैं उनके लिए तुम्हें कृतज्ञ होना चाहिए, आत्मा समय से परिमित नहीं है, आत्मा के लिए सब कुछ वर्तमान में है। जो कुछ अब करता है उसका प्रभाव सदैव के लिए है। जितनी अच्छी बातें तुम्हें मिल सकती हैं वे इस समय तुम्हारे हाथ में हैं। जितना दृढ़ तुम्हारा विश्वास इस बात पर होगा कि हमारा वर्तमान भावी का कर्ता है और जितना अपने कार्य में आनन्द मानोगे

और धन्यवाद के गीत गाओगे उतनी ही जल्दी तुम उसे दिन प्रति दिन के अनुभव में मालूम करोगे। जो कुछ मैं लिख रहा हूँ उसको सत्यता का मुझे ज्ञान है कारण कि मैं ने उसको अपने जीवन में कई बार अनुभव किया है। बहुत से इच्छित बरदान जिन को कि हम जानते थे कि उनका मिल जाना अच्छी बात है वे स्वतः प्राप्त हो गए। मैं ने बार बार उनका चिन्तवन किया, उनके लिए बहुत प्रयास किया, तथा योग्यता के लिए यत्न किया तो फिर एक दिन जब मैं प्रातःकाल सोकर उठा तो मैं ने उनको अपनी बगल में पाया। कभी कभी उन तक पहुँचने के लिए मार्ग बड़ा कंटकाकीर्ण जान पड़ता था और कभी कभी तो यह भूल भी गए कि मेरी आत्मा का इच्छित पदार्थ क्या है। परंतु प्रकृति के नियम में कभी भूल नहीं होती। नियमित समय पर सब पदार्थ अपना अपना फल देते हैं।

इच्छा भी अपने समय पर सफलीभूत होगी हमारा काम सोच विचार कर करने का है उसका फल कब मिलेगा इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

फलाशा की चिन्ता में पड़ने से कार्य्यविधि में विघ्न होगा जिससे सम्भव है कि तुम्हारी पूर्ण इच्छा पूर्ण न हो कर्म्म विपाक के अनुसार कर्मों का जो फल है वह अवश्य होगा फलाशा से न्यूनाधिकता नहीं हो सकती। हमारा कर्तव्य केवल इतना है कि हम अपने मन को जाँचे अपनी इच्छा को हर एक पहलू से टटोलें और भली भांति निश्चय कर लेवें कि हमारी इच्छा क्या है और वह ठीक है कि नहीं कि

जब इच्छा पूर्ण होने से अधिक शक्ति और लाभ पहुंचाने के सम्भावना के अवसर हाथ लगेंगे तो हम संसार को सुख और शान्ति पहुँचाने में उनको काम में लावेंगे और अपने जीवन को उत्कृष्ट और उत्तम बनाने में और ईश्वर की स्तुति में लगायेंगे ।

संसार में ऐसा कोई अवसर नहीं है, न भाग्य है और न कोई दैव ही है जो दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य के इरादे को रोक सके मांगना कुछ नहीं केवल दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिये ऐसी प्रतिज्ञा के सामने सब प्रकार की विघ्न बाधायें समय पर हट जाती हैं। कौन से बड़े बड़े रोड़े समुद्र में गिरनेवाली नदी की शक्ति को रोक सकते हैं ? दिन के चक्र को कौन रोकने में समर्थ है ? इसी प्रकार अच्छी आत्मायें अपनी आशाओं में अवश्य सफलीभूत होती हैं दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्य की इच्छा को कोई भी वस्तु नहीं रोक सकती। वह जो कुछ चाहता है अवश्य प्राप्त कर लेता है परन्तु मूर्ख मनुष्य भाग्य का दोष दिया करते हैं। वही मनुष्य बड़ा भाग्यवान है जिसकी सद् इच्छा कभी रुकती नहीं, जिसका छोटे से छोटा काम अभीष्ट के साथ में लगा रहता है। दृढ़ प्रतिज्ञ के सामने यम को भी थोड़ी देर ठहरना पड़ता है।